www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

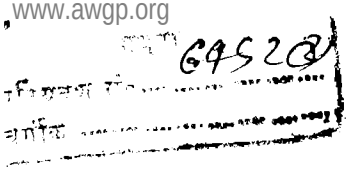

एकता, समता और सुव्यवस्था की नीति अपनायें

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

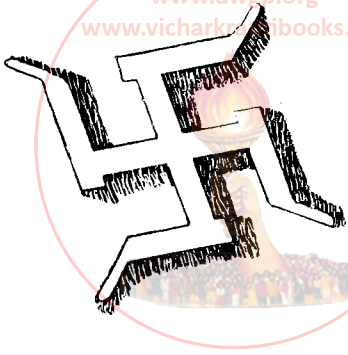

- श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एकता, समता और सुव्यवस्था की नीति अपनायें ।

❖❖

मनुष्य ने प्रगति तो बहुत की है, फिर भी उसकी सामुदायिक प्रवृत्ति में अभी दो अवांछनीयताएँ बेतरह घुसी हुई हैं और उस गरिमा से वंचित रख रही हैं, जो नियति ने उसे उदारता पूर्वक प्रदान की है ।

वे दुष्प्रवृत्तियों में से एक है संकीर्णता, दूसरी है–विलगता । दृष्टिकोण की संकीर्णता और व्यवहार में विलगता घुस पड़ने से वे दोनों ही क्षेत्र विकृत हो चले; फलतः उत्पन्न होने वाली सड़न भरी विषाक्तता ने मनुष्य का स्तर और समाज का वातावरण बेतरह अस्त-व्यस्त करके रख दिया है । फलतः समृद्धि और प्रगति के, सुख और शान्ति के स्थान पर विनाश और विग्रह उभरता, अनेकानेक संकट खड़े करते दीखता है । भावना क्षेत्र की इन दो दुष्प्रवृत्तियों में छुटकारा पाया जा सके, तो समस्त समस्याओं का हल निकले और उज्ज्वल भविष्य का, निर्धारण अनायास ही बन पड़े ।

गूलर के भुनगे और कुएँ के मेढक अपने दायरे में सन्तुष्ट पाये जाते हैं । पिंजड़े में बन्द पक्षी निश्चिन्त भी रहते हैं और सुरक्षा भी देखते हैं । इतने पर भी जिनने विस्तृत क्षेत्र में विचरण करते हुए विशालता का आनन्द लिया है, उनके लिए संकीर्णता का वह दयनीय दायरा बहुत ही लज्जा जनक और कष्ट प्रद प्रतीत होता है । निर्वाह ही तो सब कुछ नहीं है । जीवन में इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ है । उसका परित्याग करके मात्र उदरपूर्ति तक ही सीमाबद्ध रहा जाय, तो जड़-चेतन में क्या अन्तर रहा ? वृक्ष-वनस्पति भी निर्वाह साधन उपलब्ध कर लेते हैं । कृमि-कीटकों को भी उसकी कमी नहीं पड़ती । फिर आत्मा की गरिमा को पोषण कहाँ मिला ? आन्तरिक उल्लास का विकास कब संभव हुआ । महानता की अभिलाषा ही महत्वाकांक्षा कहलाती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । प्रगति का मार्ग अवरुद्ध रहे, तो हाथ पैर बंधे कैदी जैसी जिन्दगी जी लेने पर क्या मिला ? अन्न वस्त्र तो उसे भी मिल जाता है ।

अध्यात्म क्षेत्र की संकीर्णता से तात्पर्य है—अपने पन का दायरा छोटी परिधि में जकड़ लेना । शरीर तक अपनी सत्ता मानने वाले आत्मा की परवाह नहीं करते , भविष्य की ओर से आंखें बन्द किए रहते हैं, परिवार और समाज के प्रति निर्धारित उत्तरदायित्वका पालन नहीं करते । कितने ही मध्यम,अवारा स्तर के लोग जो कमाते हैं, शरीर सुख के लिए उड़ाते रहते है । उसमें अन्य किसी की भागेदारी नहीं सोचते । ऐसे 'इक्कड़' वन्य पशुओं में भी होते हैं । हाथी, सुअर, हिरन आदि में से कभी-कभी कोई-कोई झुण्ड छोड़कर एकाकी रहने लगते हैं । इसमें वे अनुशासन से स्वच्छन्द रहने का लाभ देखते हैं, किन्तु वैसा करते ही अपनी सामाजिकता गँवा बैठते हैं और ऐसी स्नेह सौजन्य जैसी सभी विशेषताएँ गँवा कर निष्ठुर—निर्मम स्तर का स्वभाव बना लेते हैं । अकारण किसी पर हमला कर बैठने की उद्दंडता बरतते रहते हैं । वनवासियों पर आतंक जमाकर वे घृणा तिरस्कार उत्पन्न करते हैं और प्रतिशोध की उसी आग में बेमौत जल मरते हैं ।

आत्मीयता—सरसता उत्पन्न करती है । जो अपना हो वही प्यारा लगता है । यह दायरा जितना छोटा होगा, प्रियजन उतने ही कम रह जायेंगे और उस लाभ से वंचित रहना पड़ेगा, जो असंख्यों को अपना मानने--बना लेने पर उपलब्ध हो सकता है । आत्मीयता का आरोपण जिस पर भी किया जायेगा, वह अपना लगेगा और आत्म विस्तार के परिकरका सदस्य बनकर आनन्द की अभिवृद्धि करेगा । जिसके अपने कम हैं, सभी वीराने दीखते हैं । वह सदा अपने को असुरक्षित , अभाव ग्रस्त और असन्तुष्ट अनुभव करेगा । आत्मीयता के विस्तार का अर्थ है—जागृतों को अपनेपन की परिधि में जकड़ लेना । अधिक सुविधा साधनों से प्रसन्नता अनुभव होती है, गर्व—गौरव प्रतीत होता है । उसी प्रकार जिसके, जितने अधिक अपने हैं, वह आत्मिक दृष्टि से अपने को उतना ही अधिक सुसम्पन्न अनुभव करता है । यही है प्रसन्नता का केन्द्र विन्दु । अनेकों के दुःख बाँट लेने और अपने सुख अनेकों को बाँट देने पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही मनुष्य हँसती-हँसाती, हलकी-फुलकी जिन्दगी जी सकता है ।

आत्म विकाश की अध्यात्म प्रक्रिया का सीधा सच्चा स्वरूप इतना ही है कि अपने पन का दायरा अधिकाधिक विस्तृत करते चला जाय । 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की मान्यता अपनाते हुए अधिकाधिकों के साथ आत्मीयता-घनिष्टता का-रिश्ता स्थापित किया जाय । अपनों के सुख-दुःख का जिस प्रकार ध्यान रखा जाता है, उसी प्रकार अन्यान्यों का भी रखा जाय । जिस प्रकार उपलब्ध क्षमताओं का लाभ साधारणतया अपनों को पहुँचाया जाता है, उसी प्रकार विशेष मनः स्थिति में उस उदार सेवा साधना को अधिक लोगों तक विस्तृत किया जाय । यहाँ तक कि उसमें प्राणि जगत को ही नहीं वनस्पतियों तक को जकड़ लिया जाय । गीता के अनुरूप सबको अपने और अपने में सबको देखा जाय । यही है सच्चा अध्यात्मवाद, इसी की छाया लेकर भौतिकतावादियों ने समाज वाद या साम्यवाद की संरचना की है ।

साधु, ब्राह्मण, वान प्रस्थ, लोक सेवी स्तर के महामानवों की एक ही प्रमुख विशेषता है कि वे आत्मीयता का परिष्कर बढ़ाते है और उसमें समूचे समाज या संसार को जकड़ लेते हैं । विराट् दर्शन यही है । समुदाय को भगवान मानने और उसके साथ श्रद्धा-संवेदना जोड़ लेने पर भगवद्भक्ति का व्यावहारिक स्वरूप लोक मंगल की साधना बनकर रह जाता है । योगाभ्यासों से सत्प्रवृत्तियों के सम्वर्धन की सेवा साधना को सर्वोत्तम एवं सर्व सुलभ माना गया है । उसमें समाज के उपकारों का प्रत्युपकार बन पड़ने से ऋण मुक्ति का हलकापन प्रतीत होता है । आत्म गौरव निखरता है और सेवा के बदले सम्मान एवं सहयोग बरसने लगता है । थोड़ा समय या धन गँवा देने के प्रथम चरण में इसमें कुछ घाटा जैसा प्रतीत होता है, पर देर तक वस्तु स्थिति अप्रकट नहीं रहती । कुछ ही समय में बीजारोपण अंकुरित होता, लहलहाता, फलता-फूलता और समुन्नत स्तर पर पहुँच कर सिर को सर्वोन्नत रख सकने की स्थिति में होता है । परमार्थ के निमित्त उठाये गये घाटे को ठीक ऐसा ही दूरदर्शी निर्धारण समझा जा सकता है ।

स्वार्थी वे जो मात्र शरीर को—स्त्री बच्चों को ही अपना मानें और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्यान्यों के प्रति उपेक्षा बरतें । परमार्थी वे जो अपने स्वार्थों को परम व्यापक बना ले । आत्मा-सीमित को और परमात्मा असीम को कहते हैं । अपने पन का दायरा बढ़ाने वाले सबके सुख दुःख में सक्रिय रूप से भागीदार बनने वाले प्रकारान्तर से परमात्मा तक ले जाने वाले सुनिश्चित राजमार्ग पर चलते हैं , महामानवों ने सदा यही रीति-नीति अपनाई है, वे शरीर या परिवार के प्रति अनिवार्य उत्तरदायित्वों का तो निर्वाह करते रहे हैं, किन्तु उतने तक सीमित नहीं रहे । देश, धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति अपने वरिष्ठ उत्तरदायित्व को भी निभाया है । आवश्यकता हुई है, तो महान के लिए तुच्छ को गौण मानने का साहस भी अपनाया है । सन्त, सज्जन, लोक सेवी, देशभक्त, महा-मानव प्रायः यही कहते रहे हैं । कुटुम्बियों की सुविधा में कटौती करके भी उन्होंने समाज गत सत्प्रवृत्तियों के सम्वर्धन में अपने को नियोजित किया है । यहाँ तक कि इसके लिए तथा कथित स्वजनों का विरोध भी सहा है और उनके आग्रह को निरस्त भी किया है । वैराग्य और त्याग-बलिदान की चर्चा इसी आदर्श के प्रतिपादन में होती रहती है । अनेक बार संचित संकीर्णता इस मार्ग में बाधक भी होती है, किन्तु उदारता की उमंगे व्यवधान को टिकने कहाँ देती हैं ।

संकीर्णता की ही तरह दूसरा व्यवधान विखराव का है । यों इन दोनों को भी एक दूसरे का अनन्य सहयोगी कहा जा सकता है । स्वार्थ परता और अहंता का आग्रह यह रहता है कि अपना स्वतन्त्र ढकोसला खड़ा किया जाय । अपनी कमाई का लाभ स्वयं लिया जाय । आत्म प्रदर्शन से अहंता का पोषण किया जाय । ऐसे ही अनेकों मनोवैज्ञानिक कारण हैं, जिनसे प्रेरित होकर लोग समूह के सदस्य रहने की अपेक्षा अपना शैतूल अलग खड़ा करते हैं । डेढ़ ईंट की मस्जिद बनाने वाले, ढाई चावल की खिचड़ी पकाने वाले प्रायः इसी स्तर के होते हैं । आठ कनौजिया नौ चूल्हे की विडम्बना वे ही रचते रहते हैं । बिखराव में उन्हें अहंता का पोषण तो मिलता है, पर ऐसे अनेकानेक लाभों से वंचित रहना पड़ता है, जो समुदाय के साथ घनिष्ठता या एकात्मकता स्थापित करने के उपरान्त ही सधते हैं । 'इक्कड़' तो दूध में से मक्खी की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तरह निकाल फेंके जाते हैं । संकीर्ण स्वार्थ परता अपनाने वालों के हाथ केवल अनर्थ ही लगता है ।

क्या व्यक्तिगत ? क्या समूह व्यवस्था–दोनों ही क्षेत्रों में हमें विशालता, उदारता एवं एकता का परिचय देना चाहिए । संयुक्त परिवार जैसी सहकारिता का हर जगह प्रतिपादन समर्थन करना चाहिए और उसे परिपक्व गतिशील बनाने में कुछ उठा न रखना चाहिए । पहल अपनी हो, तो इन सत्प्रवृत्तियोंको अपनाये जाने में भी देर न लगेगी । वरिष्ठ लोग जो करते हैं, कनिष्ठ उसका अनुगमन सहज ही करने लगते हैं । **सामूहिकता को एकता को सत्प्रवृत्तियों को** बढ़ाने में जहाँ, जिस प्रकार, जो भी किया जा सकना संभव हो किया ही जाना चाहिए । संकीर्णता और विलगाव की प्रवृत्ति को निरुत्साहित ही करते रहना चाहिए ।

जन संख्या की वृद्धि, वैज्ञानिक प्रगति, आर्थिक समृद्धि एवं बढ़ती बुद्धिमत्ता ने संसार को बहुत छोटा कर दिया है । पांच वर्षों पुरानी दुनिया से आज की दुनिया प्रायः सर्वथा भिन्न है । उसकी अगणित समस्यायें,कठिनाइयाँ विपत्तियाँ एवं विभीषिकाएँ ऐसी हैं, जिनके समाधान के लिए सामयिक उपाय सोचने होगे । प्रस्तुत चक्रव्यूह से निकलने के लिए नई रणनीति अपनानी पड़ेगी । अब राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पुरानी हो गई । उसके द्वारा क्षेत्रीय स्वार्थ संघर्ष ही खड़े किये जा सकते हैं । किये भी जा रहे हैं । स्थायी समाधानों के सूत्र उसके पास नहीं । इसी प्रकार भाषाएँ, सम्प्रदाय, प्रचलन परम्परा, आचार-व्यवहार जैसे पुरातन निर्धारण समय के साथ-साथ नहीं चल पा रहे हैं । उपयोगिता सिद्ध करने और समाधान में योगदान करने की अपेक्षा वे नये-नये संकट खड़े करने में स्वयं ही व्यवधान बन रहे हैं । उलटी स्थिति को उलटकर सीधा करने के अतिरिक्त और कोई चारा है नहीं ।

सर्वतोन्मुखी एकता, समग्र एकता और सार्वभौम सुव्यवस्थाके अतिरिक्त विनाश को विकास में बदल सकने वाला उपचार वर्तमान परिस्थितियों में संभव नहीं दीखता ।

सर्वतोन्मुखी एकता से तात्पर्य है—विश्व राष्ट्र, विश्व भाषा, एवं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्व धर्म का अभिनव निर्धारण, जन समुदाय को उन्हें अपनाने के लिए सहमत या बाधित करने के प्रबल प्रयास । यही हैं, वे उपाय अवलम्बन,जिनके सहारे एक संस्कृति का तत्व ज्ञान और एक आचार संहिता का निर्धारण किया जा सकता है । इसी आधार पर विश्व एकता बनेगी और निभेगी । विग्रहों का बर्बादियों का वर्तमान वातावरण ऐसी ही दूरदर्शी विवेक शीलता अपनाने पर निरस्त हो सकेगा ।

दूसरा सूत्र है– समता, जाति और लिंग के आधार पर बरती जाने वाली असमानता को पूरी तरह निरस्त कर दिया जाय । मनुष्य की एक विरादरी रहे । मित्रता तो बाल्ट वृद्ध की स्थिति में भी रहती है । वैसी ही नर और नारी के बीच भी कार्य क्षेत्र और नियति क्रम के अनुरूप रह सकती है परन्तु समाज व्यवस्था में कोई ऐसा अवरोधन रहने दिया जाय, जिसमें नर और नारी में से किसी को वरिष्ठ-कनिष्ठ कहा जा सके और भेदभाव का अवरोध अड़ सके । जन्म जाति के आधार ऊँच-नीच जैसा वर्गीकरण करने की न्याय निर्धारण में कहीं भी गुंजायश नहीं है । इसी प्रकार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में जन्मे–काले, सफेद, पीले, गेहुए रंग वाले भी इस आधार पर अपनी पृथकता या विशिष्टता सिद्ध न कर सकें । सभी अपने को विश्व नागरिक मानें और मानव विरादरी का एक अविच्छिन्न घटक समझें ।

तीसरा सूत्र है—सार्वभौम सुव्यवस्था । इसमें आर्थिक क्षेत्र की अपाधापी को बदल कर उत्पादन और वितरण की सार्वभौम प्रबन्ध व्यवस्था के अन्तर्गत लाया जाना है । देशों की वर्तमान सीमाएँ समाप्त करके उन्हें एक विश्व राष्ट्र के प्रबन्ध संस्थानों के हिसाब से प्रान्त जैसी स्थिति में विभाजित कर दिया जाय । समस्त धरती की भूमि विश्व राष्ट्र की हो और उस पर बसने के लिए क्षेत्र एवं जन संख्या के हिसाब से नये निर्धारण हों । उत्पादन और वितरण के बीच तारतम्य बिठाया जाय जिनमें न कोई अतिरिक्त संग्रह उपभोग करे और न किन्हीं को अभाव ग्रस्त स्थिति में रहना पड़े । बड़े साधनों के लिए बड़े उद्योग रहें, पर जिन्हें लघु उद्योगों से विकसित कर हर हाथ को काम देने की योजना के अन्तर्गत लाया जा सकता है, उन्हें बड़े

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारखानों में न जाने दिया जाय ।

शहरी आबादी बखेरी जाय और कस्बों को उन्नत किया जाय । शिक्षा, चिकित्सा, स्वच्छता, न्याय जैसी आवश्यकताएं सर्व सुलभ रहें । इस नये निर्धारण के लिए आवश्यक है कि विश्व सम्पदा केन्द्रित रहे और उपयुक्त प्रयोजनों के लिए उसका विवेक पूर्ण उपयोग होता रहे । सम्पदा कुछेक हाथों में केन्द्रित न रहे, तभी यह संभव है कि संसार में गरीबी मिटाने वाला नया तन्त्र खड़ा किया जा सके । युद्धों और महायुद्धों का सदा के लिए अन्त करने के लिए आवश्यक है कि क्षेत्रों में आन्तरिक व्यवस्था के लिए पुलिस और दस्ती हथियार रहे । झंझटों को लड़ाई से नहीं, वरन् न्याय-पंचायत से हल कराया जा सके । भाषाओं की भिन्नता मनुष्य के ज्ञान विस्तार में अत्यधिक भारी,कष्ट कर खर्चीला और झंझट भरा व्यवधान है । एक भाषा एक लिपि होने से ज्ञान की सुलभता और व्यापकता देखते-देखते हजारों गुनी अधिक बढ़ सकती है । यही बात संस्कृति, आचरण, कानून, रहन-सहन आदि के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है । उनमें एक रूपता लाने के लिए जिस निष्पक्षता,दूरदर्शिता उदारता की आवश्यकता है,उसे हर व्यक्ति अपने अपने प्रभाव क्षेत्र में विकसित करना आरम्भ कर दे । ताकि समयानुसार उस बीजांकुर को विशाल वृक्ष बनने का अवसर मिल सके ।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सिद्धान्त, यों था तो सदा से प्रशंसनीय, किन्तु अब वह समय की अनिवार्य आवश्यकता बनकर सामने आया है । हमें संकीर्णता के बन्धन काटने चाहिए और उदार आत्मीयता, एकता की दिशा में हर किसी का चिन्तन प्रवाह बहना चाहिए । बिलगाव की बात सोचनी बन्द करें । हिल मिलकर रहने और मिल-बाँट कर खाने की नीति अपनायें तभी उज्ज्वल भविष्य का निर्धारण हो सकेगा । परिवारिकता की नीति ही सर्वोत्तम है । 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श हमें अपने चिन्तन और व्यवहार में समाविष्ट करने का प्रयास आरम्भ कर देना चाहिए, ताकि मानवी गरिमा और प्रगति को सतयुग की तरह पुनर्जीवित किया जा सके ।

ब्र० २१/१९८० नवनिर्माण भवन, मु० एवं निर्माता प्रेस मथुरा एवं ४० पैसा
Complete work of Yugrishi Pandit Shriram Sharma Acharya (Founder of Awgp Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org